प्रिंटेड रेनबो

इस फिल्म को देखते हुए पता ही नहीं चलता कब पन्द्रह मिनट बीत जाते हैं। हम भी उस बूढ़ी औरत और उसकी बिल्ली के साथ-साथ इस दुनिया और कल्पनालोक के बीच कूदते-फाँदते रहते हैं जो मुम्बई की एक ऊँची इमारत के एक फ्लैट में टँगी रहती हैं। इस पार सब शान्त है। बूढ़ी औरत और उसकी बिल्ली का अकेलापन है। उनका दिन भर का बदस्तूर चलता कामकाज है – खाना, कपड़े, बरतन। कोई आसपास नहीं जिससे कुछ देर बतिया ही सकें। पर उनके पास एक सीक्रेट है। ऊब से कुछ देर के लिए निकल भागने का सीक्रेट। बहुत-सी माचिसें जमा हैं उनके बक्से में। रंगीन तस्वीरों वाली माचिसें। यहीं से होकर वे दोनों एक दूसरी दुनिया में पहुँच जाती हैं – जादुई जंगलों में, रानियों के दरबार में, ट्रक ड्राइवरों की दुनिया में...। रोज़ की एक जैसी उबाऊ ज़िन्दगी से अलग उस पार की दुनिया रंगीन है, वहाँ तेज़ बहती हवाएँ हैं, पेड़, फूल, पत्ते, नाच-गाने हैं – धूप है, हलचल है। और एक दिन जब बाहर बरसात हो रही होती है वे एक माचिस चुनती हैं। माचिस के लेबिल पर एक हरा-भरा खेत और इन्द्रधनुष बना है। हर बार की तरह वे पहुँच जाती हैं रंगीन इंद्रधनुष के उस पार। वहाँ की गाढ़ी धूप, हरियाली में वे घूमती हैं, मस्ताती हैं। और फिर वहीं बस जाती हैं हमेशा के लिए। इस दुनिया को हाथ हिलकर टाटा बाय-बाय करतीं।

इस फिल्म की निर्माता-निर्देशक गीतांजली राव हैं। *प्रिंटेड रेनबो* के बारे में वे कहती हैं कि मैं अकेलेपन की समस्या को दिखाना चाहती थी। हम जानते हैं कि आज शहरों में कितने ही घरों में बुज़ुर्ग अकेली ज़िन्दगी काट रहे हैं। कितने ही लोग हैं जो परिवार में रहते हुए भी अकेलापन महसूस करते हैं। इस तेज़ रफ्तार से दौड़ती-भागती ज़िन्दगी में किसी के पास इतना समय नहीं कि इनके पास बैठें, इनसे बातें

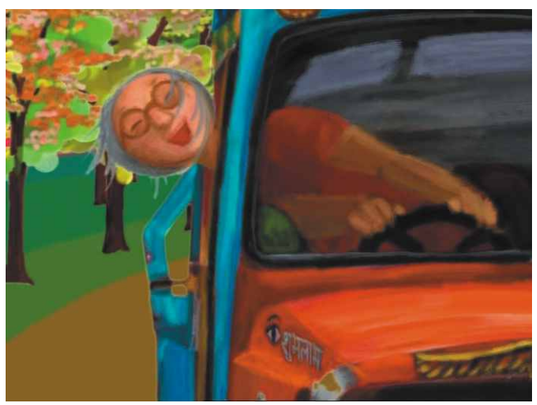

निकलने के तरीके इन्हीं को खोजने पड़ते हैं। करें। अकेलेपन से बाहर गीतांजली कहती हैं कि फिल्म की महिला और उनकी बिल्ली में उनकी माँ और उनकी बिल्ली छोटू की छवि देखी जा सकती है।

गीतांजली को माचिस की डिब्बियों पर बने चित्रों को देखने का बेहद शौक है। वे इन्हीं चित्रों के ज़रिए अकेलेपन को दिखाना चाहती थीं। फिल्म बनाने से पहले उन्होंने इस बात पर भी काफी समय लगाया कि एक बड़ी उम्र की महिला कैसा संगीत सुनती होगी और कैसी माचिसें जमा करती होगी।

वैसे तो बड़े शहरों में अधिकतर माचिसों पर घिसेपिटे चित्र ही दिखते हैं पर भारत भर में घूमने निकलो तो कई मज़ेदार चित्र दिख जाएँगे। जिनमें वहाँ के लोगों की, उनकी संस्कृति की झलक देखी जा सकती है। फिल्म की माचिसों पर भारतीय लोककलाओं का गहरा प्रभाव है। यह मुगल भित्तिचित्रों या तमिलनाडु की एक शैली या भारत भर में दिखने वाले ट्रकों के चित्रों में जान भरने जैसा है।

गीतांजली ने मुम्बई के जे. जे. इंस्टिट्यूट से कला की पढ़ाई की है। उन्हें पेंटिंग और फिल्मों दोनों में गहरी रुचि है। इन्होंने ही इस फिल्म का एनीमेशन भी किया है। बिना डायलॉग वाली इस फिल्म में काला-सफेद – यही दो रंग हैं जहाँ वो औरत और बिल्ली फ्लैट में रहती हैं। गीतांजली ने हर फ्रेम को पहले कागज़ पर बनाया फिर कम्प्यूटर पर एनिमेट किया। एनिमेशन ने उन्हें पेंटिंग और सिनेमा दोनों माध्यमों में एक साथ काम करने का मौका दिया।

2010 अन्तर्राष्ट्रीय जैवविविधता वर्ष

शिकार 2 - इल्ली

फोटो: आमोद कारखानिस

अण्डे के बाद कीट की दूसरी अवस्था होती है – इल्ली। रस भरी, निरीह और धीमी चाल इन्हें एक आसान शिकार बना देती है। उस पर ये पूरे समय पत्तियों पर पड़े-पड़े खाती रहती हैं। पर, ऐसा नहीं कि बचाव के लिए इनके पास कुछ नहीं है। कई इल्लियाँ अपने परिवेश से इतनी मिलती-जुलती हैं कि पहचानना मुश्किल हो जाता है। जैसे इसी कॉमन नवाब तितली की इल्ली को ही देख लो। इसका रंग और छापे हूबहू उन्हीं पत्तियों जैसे हैं जिन्हें यह चरती है। कुछ अन्य ज़हरीले पौधों (जैसे-रुई) पर पलती हैं। इल्लियाँ ज़हर को पचाती नहीं हैं। वह उनके शरीर में इकट्ठा होता जाता है। जो शिकारी उसे खाने की ज़ुर्रत करेगा उसे ज़हर के नतीजे भुगतने होंगे। इस तरह की तितलियों के रंग चटख होते हैं। झट-से नज़र आने वाले रंग। असल में ये शिकारी से कह रहे होते हैं – खबरदार!